69% 1:12 PM

डा. आरए चौधरी ने बताया कि पशुसेवा केंद्र जाल्हूपुर और गोपपुर तथा शिवदशा, मोकलपुर और चांदपुर में नए पशुसेवा केंद्र के निर्माण हेतु ग्राम प्रधानों द्वारा मिले प्रस्ताव को जिले पर भेज दिया गया है। बताया कि मानक के अनुसार यहां पशु सेवा केंद्र नहीं है। प्रत्येक आठ किमी की दूरी पर एक पशु सेवा केंद्र होना चाहिए।

खाली क्षेत्र के उपयोग से बढ़ेगी उत्पादकता

कृषि विज्ञान संस्थान बीएचयू में आयोजित कार्यशाला में अतिथि को स्मृति चिह्न देते विशेषज्ञ

जासं, वाराणसी : कृषि विज्ञान संस्थान, बीएचयू के प्रेक्षागृह में शनिवार को अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान कार्यशाला शुरू हुई। इसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. एके सिंह देश ने धान, गेहूं के साथ ही गेहूं और दलहन उत्पादन में सराहनीय सफलता प्राप्त की है। हालांकि आज भी देश को खाद्य तेलों के आयात पर प्रतिवर्ष 75000 करोड़ से अधिक खर्च करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया की धान उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में धान की फसल के बाद लगभग 20 लाख हेक्टेअर क्षेत्र खाली पड़ा रहता है। यदि इस क्षेत्र का उपयोग तिलहन उत्पादन में किया जाय तो ने केवल खाद्य तेलों के क्षेत्र में देश आत्म निर्भर बनेगा परंतु किसानों कि आय दुगना करने में सफलता मिलेगी। इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो. ए. वैशम्पायन, प्रो. रवि प्रताप सिंह, प्रो. पीके सिंह, डा. पीके राय, प्रो. ए. पी. सिंह आदि मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन डा. कार्तिकेय श्रीवास्तव ने किया।

जनता में परिवर्तन जानने पहुंची स्वच्छता टीम

जागरण संवाददाता, मिर्जामुराद : आराजीलाइन विकास खंड के भोजूपुर गांव में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत पहुंची टीम ने स्वच्छता का सर्वेक्षण कर रैंकिंग किया। टीम के सदस्यों ने ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया। ... करने व स्वच्छता के प्रति ... की भी जांच की। स्वच्छता को परखने हेतु स्वयंसेवी संस्था

Join the Karwaan today
Movie Tickets, Plays, Sports, Music

जनपद amarujala.com

राई-सरसों का उत्पादन बढ़ाने की जरूरत

बीएचयू कृषि वैज्ञानिकों के सम्मेलन का दूसरा दिन

अमर उजाला ब्यूरो

शताब्दी कृषि सभागार में वैज्ञानिकों को किया गया सम्मानित।

वाराणसी। बीएचयू कृषि विज्ञान संस्थान में तीन दिवसीय कृषि वैज्ञानिकों के सम्मेलन के दूसरे दिन रविवार को राई-सरसों के उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सहित अन्य जगहों से आए विद्वानों ने इसके लिए अधिक उपज वाली बीजों को बढ़ावा देने की बात कही। उधर कार्यक्रम में कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

संस्थान के शताब्दी सभागार में राई- सरसों पर शोध को लेकर चल रहे सम्मेलन में राई-सरसों अनुसंधान की प्रगति एवं भविष्य की कार्ययोजना बनाई गई कि कैसे इस क्षेत्र में विकास हो। संस्थान के प्रो. जेपी श्रीवास्तव, प्रो पीके सिंह आदि के देखरेख में हुए आयोजन में फैसला हुआ कि जलवायु परिस्थितियों के हिसाब से किस्मों का विकास संबंधी कार्य के साथ ही रोग और कीटों के प्रबंधन की प्रणाली विकसित कर इसके बारे में किसानों को बताया जाए। कार्यक्रम में मौलाना आजाद कृषि विश्वविद्यालय कानपुर से प्रो. लालू, डॉ. मधु बाजपेई, पालमपुर से प्रो. अशोक कुमार, करनाल से डॉ. राजकुमार, डॉ. उमेश चंद्र सचान को सम्मानित किया गया। समारोह में प्रो.सीपी श्रीवास्तव, डॉ. रमेश सिंह, प्रो.कार्तिकेय सहित कई लोग मौजूद रहे।

राई-सरसों की खेती से बढ़ सकता है तेल का उत्पादन

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डा. एके सिंह ने कहा कि यद्यपि देश ने धान, गेहूं और दलहन उत्पादन में सराहनीय सफलता प्राप्त की है। इसके बाद भी आज

देश को खाद्य तेलों के आयात पर प्रतिवर्ष 75000 करोड़ से अधिक खर्च करना पड़ रहा। धान उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में धान की फसल के बाद लगभग 20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र खाली पड़ा रहता है। यदि इस क्षेत्र का उपयोग तिलहन उत्पादन में किया जाए तो न केवल खाद्य तेलों के क्षेत्र में देश आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि किसानों कि आय दोगुना होगी। उक्त बातें श्री सिंह बीएचयू कृषि विज्ञान संस्थान तथा राई-सरसों निदेशालय कृषि अनुसंधान परिषद (नई दिल्ली) के संयुक्त तत्वावधान में राई-सरसों पर शोध कर रहे कृषि वैज्ञानिकों के तीन दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर कही।

उन्होंने कहा देश के बड़े भाग की मिट्टी गंधक की कमी से प्रभावित है। इसके कारण तिलहनी फसलों का उत्पादन सर्वाधिक प्रभावित है। यदि गंधकयुक्त उर्वरक के साथ जैविक उर्वरकका समन्वित प्रयोग किया जाए तो इस समस्या का समाधान सम्भव है। कृषि वैज्ञानिकों को तिलहन की फसल में रोग-खरपतवार तथा कीट से होने वाली क्षति को कम करने के लिए इनके प्रभावी प्रबंधन पर शोध और प्रसार करने की जरूरत है। डा. सिंह ने कहा कि यदि इन पर नियंत्रण हो जाए तो देश में तिलहन उत्पादन बढ़ सकता है। इस मौके पर राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डा. पीके राय, प्रो. रवि प्रताप सिंह ने भी संबोधित किया। अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. ए. वैशम्पायन, संचालन डा. ए. रक्षित, स्वागत संकाय प्रमुख प्रो. एपी सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा. कार्तिकेय श्रीवास्तव ने किया।

जर्जर स

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

क्षतिग्रस्त सड़क और सड़
पानी को लेकर मलदहिय

विकास के न

वाराणसी। शहर में विका
ध्वस्तीकरण का विरोध अब

राष्ट्रपति को काशी की जनता ने भेजा श्वेत पत्र

के नेतृ
के का
सिंह ने
शंकर
साथ रि
के नाम
रही है।

अगर शासन और प्रशासन श
कार्यक्रम में युवा कांग्रेस के
सलाम भाई, बबलू शुक्ला,

यूपी में पहली बार हुआ रिकार्ड सरसों का उत्पादन

वाराणसी (एसएनबी)। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान संस्थान में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित राई-सरसों परियोजना की 25वीं समूह बैठक में सोमवार को तकनीकी हस्तारण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के ऊपर चर्चा का आयोजन किया गया। देश में राई-सरसों उत्पादन बढ़ाने के लिये किए जा रहे प्रयासों एवं विभिन्न राज्यों में राई-सरसों उत्पादन की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य के लिए निर्धारित कार्यक्रमों के बारे में सरसों अनुसंधान निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डा. अशोक शर्मा ने जानकारी दी।

सरसों अनुसंधान निदेशालय (भरतपुर) के निदेशक डा. पीके राय ने बताया कि वर्ष 2017-18 में 12.45 कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के साथ उत्तर प्रदेश में 4.71 लाख मैट्रिक टन राई-सरसों का उत्पादन हुआ एवं पहली बार 19.40

कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के साथ वाराणसी मंडल अव्वल रहा। इसका पूरा श्रेय मंडल के सरसों उत्पादकों, कृषि विभाग एवं बीएचयू में स्थित राई-सरसों परियोजना केन्द्र को जाना चाहिए, जिनके प्रयासों से मंडल एवं प्रदेश में प्रजातियों एवं बीज के बदलाव के साथ उन्नत उत्पादन एवं संरक्षण उपायों को समावेश उत्पादन में किया सका। जिसके कारण उत्पादन एवं उत्पादकता में रिकार्ड वृद्वि दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि बीएचयू के कृषि विज्ञान केन्द्र मिर्जापुर में राई-सरसों बीज उत्पादन के लिए 1.50 करोड़ रूपये की लागत से बीज हब की स्थापन की जा रही है। यह बीज हब इसी वर्ष से बीज उत्पादन करने लगेगा जिससे किसानों को उचित मूल्य पर उन्नतशील प्रजातियों का प्रभावित बीज उपलब्ध होने लगेगा। उन्होंने आवाह्न किया कि उद्योग को भी इस दिशा में आगे आना चाहिए ताकि सरसों उत्पादक किसानों की जरूरत के अनुरुप तेल निकालने की बड़ी मशीने स्थापित की जा सके और किसानों को क्षेत्रीय स्तर पर अपना उत्पाद बेचने का अवसर मिल सके। बैठक के समापन समारोह में कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. ए. वैशम्पायन ने संस्थान में स्थित राई-सरसों परियोजना केन्द्र के क्रियाकलापों पर संतोष व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि आने वाले समय में प्रो. कर्तिकेय श्रीवास्तव के नेतृत्तव में केन्द्र और अच्छा काम करेगा, जिससे क्षेत्र में उन्नतशील प्रजातियों, उत्पादन एवं संरक्षण तकनीकों का और ज्यादा प्रचार-प्रसार हो सके। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने को दिया गया प्रशिक्षण

वाराणसी। जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवाज फाउंडेशन ने निशुल्क प्रशिक्षण दिया। उक्त बातें संस्था की सचिव नीतू सिंह ने कही। कहा कि ब्यूटी पार्लर की विधा से हर माह पांच महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार दिया जा रहा है। सोमवार को हुए वार्षिक समारोह में मेंहदी, जूड़ा-चोटी तथा वाइडल मेकअप प्रतियोगिता आयोजन हुआ। इसके मुख्य अतिथि पूर्व मद्य निषेध अधिकारी अरुण कुमार सिंह रहे। इस दौरान मेंहदी प्रतियोगिता में प्रथम नीतू साहनी, द्वितीय नंदनी व तृतीय रेखा को नीतू सिंह को एके सिंह व नीतू सिंह ने तथा जूड़ा

शिक्षा हासिल करके तरक्की में जुटें नौजवान

वाराणसी। मदरसा अहले सुन्नत जामिया अरबिया ज़ियाउल उलूम कच्चीबाग पीलीकोठी का 65 वाँ स्थापना दिवस प्रिंसिपल मौलाना गुलाम नबी ज़ियाई की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर मोलवी मोहम्मद अहमद, मोलवी नईमुद्दीन,मोलवी रियाज़ अहमद ने शिक्षा की आवश्यकता और उसकी अहमियत पर ज़ोर देते हुए कहा

कृषि विज्ञान केंद्र मिर्जापुर में बनेगा बीज हब

बीएचयू में वैज्ञानिक सम्मेलन का समापन, राई-सरसों बीज का उत्पादन बढ़ाने पर चर्चा

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। बीएचयू के कृषि विज्ञान संस्थान में चल रहे तीन दिवसीय वैज्ञानिक सम्मेलन में राई-सरसों बीज और इसके बेहतर उत्पादन पर विस्तृत चर्चा की गई। समापन समारोह में सरसो अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के निदेशक डॉ. पीके राय ने बताया कि राइ सरसो का उत्पादन साल दर साल बढ़ता जा रहा है।

बताया कि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र मिर्जापुर में राई-सरसों बीज उत्पादन के लिए 1.50 करोड़ रूपये की लागत से बीज हब की स्थापना कराई जा रही है। समारोह में देश में राई-सरसों उत्पादन बढ़ाने के लिये किए जा रहे प्रयासों के बारे में वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने विस्तार से समझाया। निदेशक डा. पीके राय ने बताया कि वर्ष 2017-18 में 12.45 कु0/हेक्टेयर उत्पादकता के साथ उत्तर प्रदेश में 4.71 लाख मैट्रिक टन राई-सरसों का उत्पादन हुआ। पहली बार 19.40 कुंतल/हेक्टेयर उत्पादकता के साथ वाराणसी मंडल अव्वल रहा।

डेढ़ करोड़ की लागत से बन रहे बीज हब से किसानों को लाभ

इसका पूरा श्रेय मंडल के सरसों उत्पादकों, कृषि विभाग एवं विश्वविद्यालय के राई-सरसों परियोजना केन्द्र को किया जाना चाहिए ।बीज हब खुलने के बाद किसानों को उचित मूल्य पर उन्नतशील प्रजातियों का प्रभावित बीज उपलब्ध होने लगेगा। कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. ए वैशम्पायन ने परियोजना केंद्र के बारे में जानकारी दी। इस दौरान प्रो.कार्तिकिय श्रीवास्तव सहित कई लोग मौजूद रहे।

बीएचयू के कृषि विज्ञान सभागार में सोमवार को समापन सम्मेलन समारोह में शामिल लोग। अमर उजाला

बच्चों को बीमारियों से

समाज की समस्या का अंत करने

विश्वनाथ मंदिर में सुरक्षा

न्यूज

परिषदीय

वाराणसी।
एक बैठक
शिक्षा अधि
खेलकूद, पै
चर्चा की ग
की हिदायत
चित्रकला प्र

फेसबुक

वाराणसी।
कर फेसबुक
आरोपियों के
लक्ष्मणपुर अ
खिलाफ मुक
संबंध में सम
परेशान होक

11 रेलव

लखनऊ।
वाले 11 रे
इस क्रम में
जुड़े वाराण
कुमार, लोक
टेक्नीशियन
सहित 11

प्रशिक्षण

वाराणसी।
जीर्णोद्धार क
का समापन

अमर उजाला

Date-.......5

जल प्रबंधन से होगा चार गुना फसल उत्पादन

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत 'पर ड्राप, मोर क्राप' (माइक्रोइरीगेशन) आधारित एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शनिवार को कंपनी बाग स्थित राजकीय उद्यान के खाद्य प्रसंस्करण सभागार में दिया गया। इसका उद्घाटन जिला विकास अधिकारी आरके तिवारी और वैज्ञानिकों ने दीप जलाकर किया। इस मौके पर किसानों को उपलब्ध होने वाली तकनीकी साहित्य पुस्तिका का विमोचन किया गया।

भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. अनंत बहादुर सिंह ने प्रति व्यक्ति जल की घटती उपलब्धता पर चिंता जताई। औद्यानिक फसलों में टपक एवं बौछारी सिंचाई की उपयोग की आवश्यकता एवं उत्पादकता पर इसके प्रभाव के बारे में बताया। सब्जी अनुसंधान के प्रधान वैज्ञानिक डा. एसके सिंह ने कहा कि औद्यानिक फसलों में मल्चिंग (पलवार) के लाभ एवं मल्चिंग के साथ-साथ सूक्ष्म सिंचाई पद्धति से उत्पादन की गुणवत्ता के सुधार के बारे में बताया। बीएचयू कृषि विभाग के प्रो. एके नेमा ने वर्षा जल संचयन एवं भूमि जल स्तर रिचार्ज हेतु सामुदायिक प्रयास के महत्व एवं तकनीकी से अवगत कराया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा. एनके सिंह ने ड्रिप एवं स्प्रिंकलर पद्धति के उपयोग की विधि एवं रख-रखाव पर प्रकाश डाला।

'पर ड्राप, मोर क्राप' पर किसानों को दिया प्रशिक्षण सिंचाई के तरीके बताए

डीलरों ने अपने उत्पाद का प्रदर्शन किया। उप निदेशक उद्यान मुन्ना यादव ने ड्रिप एवं स्प्रिंकलर के रख रखाव एवं सिंचाई के लिए वाटर टैंक के इस्तेमाल पर बल दिया गया।

किसानों की आय दुगुनी से बदलेगी तस्वीर

वाराणसी। बीएचयू कृषि विज्ञान संस्थान में तीन दिवसीय कृषि वैज्ञानिकों का सम्मेलन शनिवार से शुरू हुआ। इस दौरान किसानों की आय दुगुनी करने के फैसले की सराहना की गई। बतौर मुख्य अतिथि परिषद के महानिदेशक डॉ.एके सिंह ने कहा कि जल्द ही इसका असर देखने को मिलेगा। संस्थान के शताब्दी सभागार में राई सरसों पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों के सम्मेलन में डॉ. सिंह ने कहा कि पूर्वांचल में कृषि पर ज्यादा फोकस करने की जरूरत है।